ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता का उनकी शिक्षण अभिक्षमता पर प्रभाव

उर्मिला सिंह
शोध छात्रा,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
महात्मा गॉधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट, सतना, म0प्र0

सारांश

चूँकि शिक्षा जीवन के उद्देश्य तथा जीवन शैली की अनुगामिनी होती है। अतः आवश्यकता इस बात है कि ऐसे सिद्धान्तों को अनुगमन किया जाये जिससे उच्च जीवन दर्शन की स्थापना हो सके। शोधार्थिनी ने अपने शोध में बांदा जिले के छः ब्लाकों के उन तमाम विद्यालयों में जाकर वहॉ के अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता उनकी शिक्षण अभिक्षमता के विषय में जानकारी हासिल करते हुये पाया कि प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की उनकी शिक्षण अभिक्षमता पर कोई प्रभाव नही डालती है। अध्ययन में पाया गया कि आज पूर्व की अपेक्षा व्यक्ति की अपनी कार्यकुशलता भी महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द : प्राथमिक विद्यालय, कार्यरत अध्यापक, अभिक्षमता ।

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति और समाज दोनो सापेक्ष है। एक दूसरे के पूरक है और एक के बिना दूसरे का आस्तित्व नही है। अतः व्यक्ति की शिक्षा इस प्रकार हो कि वह अपने गुणो का उपयोग अपने विकास तथा समाजोत्थान के लिये करे। करने की यह प्रक्रिया शिक्षण आधारित है। स्व शिक्षण का आधार आवश्यकता तथा अनुकरण है। सामान्य शिक्षण का आधार शिखक है। वह कतिपय कौशलो तक नीक तथा प्रविधि के द्वारा सरलता से बालक में वांछित व्यवहार परिवर्तन करता है। शिक्षक बालक की जन्मजात विशेषताओं रूचियों प्रवृत्तियों में वातावरण निर्माण तथा अनुभव तथा कौशल से परिवर्तन करता है। उसकी प्रकृति मानसिक स्तर, रूचि, बौद्धिक योग्यता, व्यक्ति निष्पत्ति आदि में विकास करता है।

शिक्षा अनादिकाल से चली आ रही मानव व्यवहार को परिमार्जित करने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा मनुष्य का सामाजिक मान्यताओं के अनुसार विकसित करने में विशेष योग दिया है। वर्तमान समय में भारत की प्रारम्भिक शिखा व्यवस्था विश्व की सबसे बडी व्यवस्थाओं में से एक है। जहॉ हमारी सरकार समय समय पर शिक्षक शिक्षिकाओं की नियुक्ति करती है और सर्वशिक्षा अभियान कार्यक्रम का संचालन करती है, ताकि बच्चा बच्चा शिक्षित हो सके। चूँकि बच्चा देश का कर्जधार माना जाता है, अतः हर एक शिक्षक का उत्तरदायित्व होता है कि पूर्व मनोभाव से शिक्षण कार्य करे। कहा भी गया है कि ''राष्ट्र का निर्माता शिक्षक ही है।''

आज के इस भौतिकवादी युग में शिक्षा का स्तर दिनो–बदन गिरता जा रहा है। इसका प्रमुख कारण छात्र, अभिभावक व शिक्षक है । शिक्षक का कार्य मानव निर्माण कार्य है। किसी भी भौतिक निर्माण कार्य से ही कही अधिक जटिल है। अतः इसके प्रशिक्षण के लिये प्रशिक्षणार्थी कार्यक्रमों से अधिक तकनीकी ज्ञान और कौशलों के विकास की आवश्यकता है परन्तु खेद है कि जहॉ भवनो, पुलों, बॉधो के लिये प्रशिक्षण देने वालो को 4/5 वर्ष तक प्रशिक्षण देना पड़ता है। वही हमारा शिक्षक डेढ़ से दो साल मे प्रशिक्षिण हो जाता है और हमारे मुक्त विश्वविद्यालय इस समय सीमा में भी मुक्ति दिलाने में कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे है। अतः हमारा शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम निरन्तर सन्दर्भहीन, अर्थहीन होता जा रहा है। हम समय की मांग के अनुरूप अपने कार्यक्रमों में परिवर्तन लाये। समय पर कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं को प्रशिक्षित किया जाये तथा उनकी अभियोग्यता में परिवर्तन हो और वे अपने व्यवसाय के प्रति सजग होकर कार्य कर सके।

अध्ययन का उद्देश्य

प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता का उनकी शिक्षण अभिक्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना है।

पारिभाषिक शब्दावली

प्राथमिक विद्यालय

वह विद्यालय जिसमें छात्र/छात्राओं को बेसिक शिक्षा दी जाती है।

कार्यरत अध्यापक

वे पुरूष एवं महिलायें जो अर्थोपार्जन के लिये सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों में
अध्यापन का कार्य करते है तथा नियम व कानून का पालन करते है।

शैक्षिक योग्यता

शिक्षक की अपने अध्ययनकाल के दौरान जो डिग्रियॉ हासिल की है।

अभिक्षमता

अभिक्षमता किसी एक क्षेत्र या समूह में व्यक्ति की कार्य कुशलता की विशिष्ट योग्यता अथवा विशिष्ट क्षमता है।

परिकल्पना

प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता का उनकी शिक्षण अभिक्षमता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सर्वप्रथम शोधार्थिनी द्वारा बाँदा जिले के छः ब्लॉकों के छः सौ अध्यापकों का चयन किया गया है, जिसमें कि 400 सरकारी एवं 200 अर्द्धसरकारी विद्यालय के अध्यापक लिये गये हैं। सरकारी विद्यालय के 300 पुरूष एवं 100 महिला अध्यापक हैं, तिन्दवारी ब्लॉक के 50 पुरूष, 16 महिला , बबेरू ब्लॉक के 50 पुरूष, 17 महिला, कमासिन ब्लॉक के 50 पुरूष, 17 महिला, बिसण्डा ब्लॉक के 50 पुरूष, 16 महिला, नरैनी ब्लाक के 50 पुरूष, 17 महिला, बड़ोखर ब्लॉक के 50 पुरूष, 17 महिला अध्यापकों का चयन किया गया।

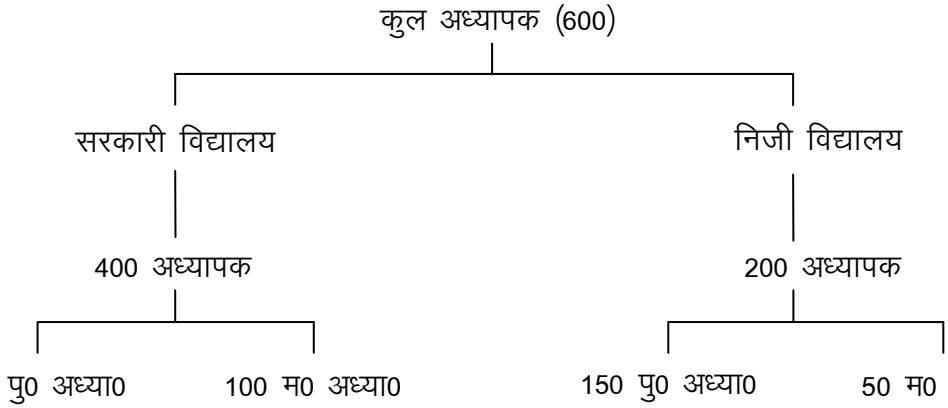

शैक्षिक योग्यता

सभी अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता के लिए उनके हाईस्कूल से लेकर उनकी अन्तिम डिग्री के कुल अंकों का अलग–अलग प्रतिशत निकालकर कुल डिग्रियों की सँख्या का भाग देकर, जितना प्रतिशत आया, उस प्रतिशत को शैक्षिक योग्यता का आधार माना गया है।

शिक्षण अभिक्षमता

अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता का मापन करने के लिए शोधार्थिनी सरकारी एवं निजी विद्यालयों में पहुँच कर अध्यापकों से प्रश्नावली (T.A.T.B.-SS) जो Dr. R.P. Singh एवं S. N. Sharma द्वारा निर्मित है, भरवाया गया आर मूल्याँकन के लिए माने गये पैमाने के आधार पर मूल्याँकन किया गया।

साँख्यिकीय प्रविधियाँ

सांख्यिकीय प्रविधियाँ के अन्तर्गत, मध्यमान, मानक विचलन एवं T test का उपयोग किया गया है। शोधार्थिनी के द्वारा एकत्र किये गये आँकड़ों के उच्च शैक्षिक गुणाँक के 27 प्रतिशत के अध्यापाकों एवं निम्न शैक्षिक गुणाँक वाले 27 प्रतिशत अध्यापकों को लिया गया है।

T. A. T. B.

उच्च– 27% 600 = 162

सारणी–1

वर्गान्तर	आवृत्ति (f)	मध्याँक (M)	विचलन (d)	f x d		f x d^2
40 – 48	1	44	-5	-5		25
48 – 56	5	52	-4	-20		80
56 – 64	14	60	-3	-42	-159	126
64 – 72	32	68	-2	-64		128
72 – 80	28	76	-1	-28		28
80 – 88	33	84	0	0		0
88 – 96	20	92	+1	+20		20
96 – 104	15	100	+2	+30	-93	60
104 – 114	13	108	+3	+39		112
114 – 122	1	118	+4	+4		16
	N = 162			Σfd= –66		Σfd^2=600

AM = 84,
N=162,
C S =9

$$M = AM = \frac{\sum fd}{N} xC.I.$$

$$= 84 + \left(\frac{-66}{162}\right)x9$$

= 84 – 3.67
M = 80.33

$$S.D. = C.I.\ x \sqrt{\frac{\sum fd^2}{N} - \left(\frac{\sum fd}{N}\right)^2}$$

$$= 9\ x \sqrt{\frac{600}{162} - \left(\frac{-66}{122}\right)^2}$$

$$= 9\ x \sqrt{3.70 - 0.12}$$

$$= 9\ x\ 1.88$$

$$S.D. = 16.92$$

निम्न शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापक
(27% of 600 = 162)

सारणी–2

वर्गान्तर	आवृत्ति (f)	मध्याँक (M)	विचलन (d)	f x d	f x d^2
50 – 58	5	54	-3	-15	45
58 – 66	25	62	-2	-30	100
66 – 74	38	70	-1	-38	38
74 – 82	41	78	0	0	0
82 – 90	26	86	+1	+26	26
90 – 98	12	94	+2	+24	48
98 – 106	10	102	+3	+30	90
106 – 114	4	110	+4	+16	64
114 – 122	1	118	+5	+5	25
	N = 162			Σfd=+28	Σfd^2=436

AM = 78, N=162,
C.I.=9

$$M = AM + \frac{\sum fd}{N} xC.I.$$

$$= 78 + \left(\frac{28}{162}\right)x9$$

= 78 + 1.56
M = 79.56

$$S.D. = C.I.\ x \sqrt{\frac{\sum fd^2}{N} - \left(\frac{\sum fd}{N}\right)^2}$$

$$= 9\ x \sqrt{\frac{436}{162} - \left(\frac{+28}{162}\right)^2}$$

$$= 9\ x \sqrt{2.69 - 0.029}$$

$$= 9\ x \sqrt{2.661}$$

$$= 8\ x\ 1.63$$

$$= S.D.$$

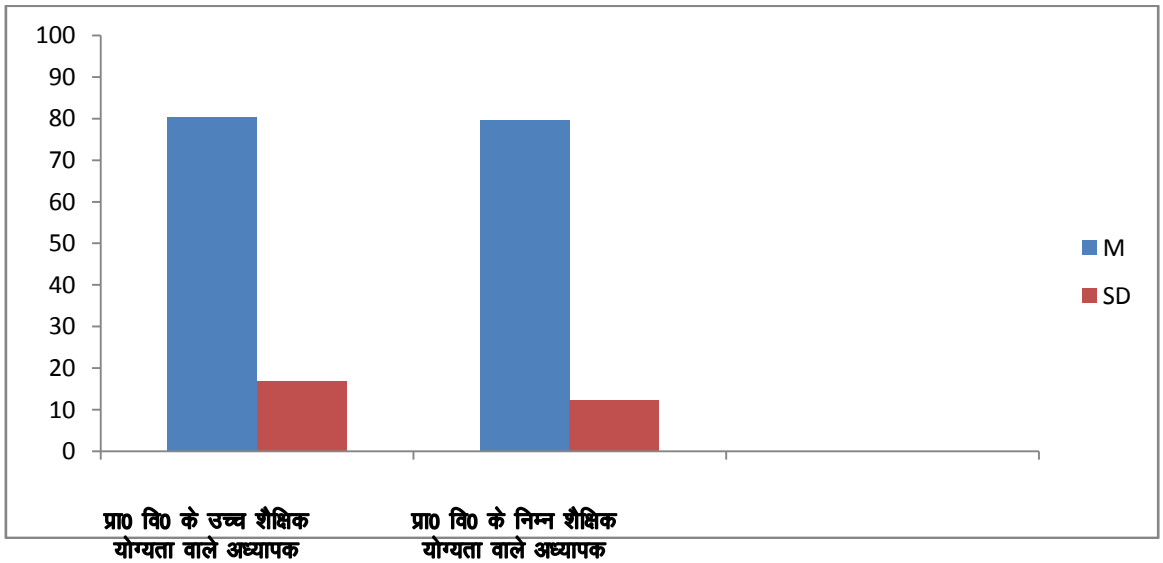

सारणी से स्पष्ट है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयो के उच्च शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता का मध्यमान 8.33 है तथा मानक विचलन 16.92 है। निम्न शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता का मध्यमान 79.56 है तथा मानक विलचन 14.67 है। T test लगाने पर दोनों माध्यों का **उच्च शैक्षिक योग्यता वाले**

सारणी–3

समूह	सँख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	C.R.
उच्च शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापक	162	80.33	16.92	
निम्न शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापक	162	79.56	14.67	0.44

$$\sigma D = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}$$

$$= \sqrt{\frac{(16.92)^2}{162} + \frac{(14.67)^2}{162}}$$

$$= \sqrt{1.77 + 1.33}$$

$$= \sqrt{3.1}$$

$$\sigma D = 9.76$$

$$C.R. = \frac{M_1 - M_2}{\sigma D} = \frac{79.56 - 80.33}{1.76}$$

$$= \frac{0.77}{1.76}$$

$$C.R. = 0.44$$

$df = N_1 + N_2 - 2$

$df = 162 + 162 – 2$

$= 322$

यहाँ पर 322 d.f. पर 't' का सारणी मान 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक 't' का मान = 1.97 0.01 स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक 't' का मान = 2.59

जो कि सार्थक नहीं हैं।

अतः हमारी शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और यही मानना पड़ेगा कि दोनों समूहों के शिक्षण अभिक्षमता के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः अध्ययन में पाया गया कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों (पुरूष एवं महिला) की शैक्षिक योग्यता का उनके शिक्षण अभिक्षमता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष

आज का युग वैज्ञानिक युग है हमे उन सभी चुनौतियों के लिये तैयार रहना है जो हमे परिवर्तन के फलस्वरूप मिलती है। शिक्षा के क्षेत्र में भी नित्य नवीन संशोधन परिवर्तन तथा शोध होते रहते है। चूँकि अभिक्षमता व्यक्ति की वह मानसिक योग्यता है जो किसी विशिष्ट क्षेत्र में उसकी सफलता की सम्भावना का संकेत करती है। यह शिक्षक की वह अन्तनिर्हित शक्ति है जो C.R.-0.44 आया है, जो कि 322 df पर 0.05स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. ('t') का मान 1.97 है तथा 0.01 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R. ('t') का मान 2.59 से बहुत कम है।

उसे किसी कार्य के प्रति उन्मुख करती है। अतः अध्ययन में पाया गया कि शैक्षिक योग्यता चाहे वह निम्न स्तर पर हो या उच्च स्तर पर इसका प्रभाव शिक्षण अभिक्षमता पर नही पडता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भारतीय शिक्षा का विकास, आलोक प्रकाशन, लखनऊ, इलाहाबाद– लेखक– डॉ0 मालती सारस्वत, प्रो0 एस0एल0 गौतम*
2. *उभरते भारतीय समाज में शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, लेखक– डॉ रामशकल पाण्डेय।*
3. *वर्तमान भारतीय समाज और प्रारम्भिक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, लेखक– नम्रता वशिष्ट, रामप्रकाश शर्मा*
4. *प्रगतिशील/उदीयमान भारत में शिक्षा राधा प्रकाशन मंदिर आगरा, लेखिका– श्रीमती राजकुमारी शर्मा*
5. *अधिगम का विकास और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–2, लेखक– डॉ0 रामपाल सिंह, डॉ0 राधावल्लभ उपाध्याय*
6. *मनोविज्ञान समाज शास्त्र में शिक्षा में शोध विधियॉ, प्रकाशन– मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली – लेखक– अरूण कुमार सिंह*
7. *वर्तमान भारतीय समाज और प्रारम्भिक शिक्षा, राधा प्रकाशन मन्दिर प्रा0लि0 आगरा, लेखक– श्रीमती आर0के0 शर्मा, प्रो0 श्रीकृष्ण दुबे, श्रीमती अनीता बरौलिया*
8. *विकासोन्मुख भारीयत समाज में शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2, लेखक– गुरसदन दास त्यागी।*
9. *भारतीय शिक्षा और उनकी समस्यायें, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2, लेखक–पी0डी0पाठक*
10. *भारतीय शिक्षा में समसामयिक प्रकरण, शारदा पुस्तक सदन, इलाहाबाद, लेखक – प्रो0एस0पी0गुप्ता, डॉ0 अल्का गुप्ता*
11. *शिक्षा की दार्पूनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी जयपुर, लेखक डा0 लक्ष्मी के ओड़*
12. *शिक्षा के दार्पूनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठ रस्तोगी पब्लिकेशन, लेखक– रमन बिहारी लाल*
13. *समृद्ध शिक्षा अभियान– राज्य परियोजना निदेशक, लखनऊ, लेखक– जे एस दीपक, आई0ए0एस0*
14. *शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, लेखक– रामशकल पाण्डेय*